22

आतम अनुभव करना....

(कविवर पण्डितश्री द्यानतरायजी)

आतम अनुभव करना रे भाई, आतम अनुभव करना रे।
जब लौं भेदज्ञान नहीं उपजै, जन्म-मरण दुःख भरना रे ॥टेक॥

आगम पढ़ नव तत्त्व बखाने, व्रत तप संयम धरना रे।
आतम ज्ञान बिना नहिं कारज, यौनी संकट परना रे ॥1॥

सकल ग्रन्थ दीपक हैं भाई, मिथ्यातम को हरना रे।
कहा कहे ते अन्ध पुरूष को, जिन्हैं उपजना मरना रे ॥2॥

'द्यानत' जे भवी सुख चाहत हैं, तिनको यह अनुसरना रे।
सोऽहं ये दो अक्षर जप के, भवोदधि पार उतरना रे ॥3॥